International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 97-105

आधुनिकीकरण एवं वृद्धजनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

वंदना देवी[1]* | प्रो. जयश्री राठौड़[2]

[1]शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा।
[2]आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा।

*Corresponding Author: vandana.sje@gmail.com

Citation: देवी, वंदना एवं राठौड़, जयश्री. (2025). आधुनिकीकरण एवं वृद्धजनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 97–105.

सार

आधुनिकीकरण की अवधारणा का प्रार्दुभाव द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से मानाा जाता है। यह मुख्य रूप से एक सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जो तार्किक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा नवीन सामाजिक मूल्य व मानक पैदाक रती है। इन नवीन मूल्यों के प्रभाव से ही सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन होता है। आधुनिकीकरण की इस प्रक्रिया में समाज को तकनीकी, शैक्षिक व आथ्रिक रूप से तो उन्नत किया है परन्तु समाज के कुछ वर्गों विशेषकर बुजुर्गों की प्रस्थिति को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य आधुनिकीकरण के प्रभावों के संदर्भ में वृद्धजनों की बदलती प्रस्थिति, समस्याओं व नवीन भूमिकाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है।

शब्दकोशः *आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण, नगरीकरण, वृद्धजन, संयुक्त परिवार, सामाजिक मूल्य, प्रस्थिति, भूमिका।*

प्रस्तावना

आधुनिकीकरण की अवधारणा का प्रादुर्भाव द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से माना जाता है। इस समय लैटिन अमरीकी, अफ्रीकी व एशियाई देश विदेशी शासकों से स्वतंत्र होकर अपने–अपने तरीके से अपने नागरिकों का जीवन बेहतर बनाने की ओर अग्रसर होने लगे। उस समय के विद्वानों ने पश्चिम के देशों को आदर्श या संदर्भ मानते हुए तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य की सहायता से उन उत्तर–औपनिवेशिक देशों में हो रहे सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तनों का अध्ययन किया तत्कालीन पश्चिमी समाज पुनर्जागरण व औद्योगिकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से जिस रूप में विकसित हुआ उसे ही उन्होंने आधुनिक समाज की संज्ञा दी तथा उसी के आधार पर उन नव–स्वतंत्र देशों को परम्परागत समाज माना। कालान्तर में उन पश्चिमी देशों के प्रभाव व सम्पर्क के परिणामस्वरूप तुलनात्मक रूप से कम विकसित व नव–स्वतंत्र देशों में सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक अवस्था में हुए परिवर्तनों को आधुनिकीकरण कहा गया इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक परिवर्तन व आर्थिक विकास की एक ऐसी संयुक्त प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ऐतिहासिक एवं अल्प–विकसित समाज स्वयं को पश्चिमी देशों की तर्ज पर विकसित करने में प्रयत्नशील है।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

आधुनिकीकरण का अर्थ एवं परिभाषा

समाजशास्त्र के क्षेत्र में आधुनिकीकरण का प्रयोग समतामूलक समाज की स्थापना एवं जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के अर्थ में होता है। यह बात अलग है कि आधुनिकीकरण से समाज में अशांति क्षेत्रीयता, जातिवाद, वर्ग–संघर्ष, मानसिक रोग, अपराध जैसी समस्याओं को अप्रत्यक्ष रूप से कभी–कभी बढ़ावा मिलता है। आधुनिकीकरण वर्तमान समाज की बहुत प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक विशेषता है। विश्व का हर समाज कमोबेश इस स्वभाविक प्रक्रिया से गुजर रहा है।

प्रारम्भ में आधुनिकीकरण शब्द का प्रयोग ऐसी प्रक्रिया के रूप में किया गया है जिसने समाज को प्रमुख रूप से कृषि प्रधान समाज से औद्योगिकी अर्थव्यवस्था पर आधारित समाज में परिवर्तित कर दिया है। इस प्रकार परिवर्तन के परिणामस्वरूप समाज में मूल्यों, विश्वासों एवं मानदण्डों में भी परिवर्तन आने लगा है। आजकल आधुनिकीकरण शब्द को वृहद् अर्थ दिया जाता है। इसका एक ऐसा सामाजिक परिवर्तन माना जाता है जिसमें विज्ञान और तकनीकी के तत्व शामिल होते हैं। साथ ही आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सम्बद्ध समाज द्वारा स्वीकृत विस्तृत अर्थों में अधिक अच्छे व संतोषजनक जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से 'आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान' को समाज में पहुँचाया जाता है। आधुनिकीकरण सामाजिक संगठन के संरचनात्मक पक्ष और समाजों के सामाजिक जनसंख्यात्मक, दोनों पक्षों की व्याख्या करते हैं। अर्थात् आधुनिकीकरण समाज की संरचना एवं जनांकिकी पहलुओं में परिवर्तन हैं। कुछ विद्वानों ने आधुनिकीकरण के अधिकतर सामाजिक जनसंख्यात्मक पक्षों को स्पष्ट करने के लिए 'सामाजिक गतिमान' शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने सामाजिक गतिशीलता को इस प्रकार परिभाषित किया है कि 'ऐसी प्रक्रिया जिसमें पुरानी सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिबद्धताओं के समूह मिटा दिये जाते है व तोड़ दिये जाते है और नवीन प्रकार के समाजीकरण और व्यवहार प्रतिमानों के लिए तैयार रहते है।' "आधुनिकीकरण व्यक्ति व समाज के अनुसंधानात्मक व आविष्कारशील दृष्टिकोण का विकास है, जो तकनीकी तथा मशीनों के प्रयोग में निहित होता है तथा जो नये प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों को प्रेरित करता है।

प्रसिद्ध आधुनिकतावादी विचारक **एस.एन. आइजनस्टेड** ने अपनी पुस्तक **'मॉडर्नाइजेशन प्रोटेस्ट एण्ड चेंज'** में कहा है कि आधुनिकीकरण आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में परिवर्तन हैं। उनके अनुसार प्रौद्योगिकी का उच्च स्तर, वयस्क मताधिकार द्वारा प्रजातंत्र में भागीदारी अनुकूलन की क्षमता तथा परानुभूति में वृद्धि, संगठनों के आकार में वृद्धि एवं जटिलता तथा नगरीकरण में वृद्धि आधुनिकीकरण के मुख्य लक्षण है।[1]

एन्थोनी गिडेन्स ने अपनी पुस्तक **'कान्सेक्यून्सेज ऑफ मोडर्निटी'** में आधुनिकता की परिभाषा में चार बुनियादी संस्थागत आयाम के संदर्भ में करते है। इनका पहला आयाम पूंजीवाद है। इसके अन्तर्गत माल का उत्पादन, निजीकरण, दिहाड़ी करने वाले मजदूर आदि आते हैं। आधुनिकता का दूसरा आयाम उद्योगवाद है। इसमें प्रकृति की वस्तुओं से ऊर्जा प्राप्त की जाती है। इसके अन्तर्गत आवागमन के साधन, संचार व्यवस्था तथा घरेलु जीवन आ जाते हैं। तीसरा आयाम सैनिक शक्ति अथात् निगरानी रखने की क्षमता है।

इसमें राज्य नागरिकों पर नजर रखता है। उन पर निगरानी रखी जाती है और इसका सरोकार सैनिक शक्ति से होता है। चौथी संस्थागत आयाम प्रशासनिक क्षेत्र में देखने को मिलता है अर्थात् राष्ट्र–राज्य है जो राज्य हिंसा के साधनों पर अपना नियंत्रण रखता है। इस प्रकार गिडेन्स के अनुसार इन चारों संस्थाओं का गठबंधन ही आधुनिकता है।

एंथोनी गिडेन्स ने आधुनिकता के विश्लेषण की एक और कारक की बात की हैं। यह कारक समय–स्थान के साथ जुड़ा हुआ है। उनका कहना है कि परम्परागत लोग अपने समुदाय से जुड़े रहते थे, सभी लोग होली पर रंग छिड़कते थे व त्यौंहार के समय मिठाईयाँ खाते थे तब समुदाय की इस परम्परा के अनुसार वह भी सब कुछ करता था, लेकिन आधुनिक समाज में यह सब कुछ नहीं होता है। लोग समुदाय से हटकर

जीवन को बिताते है। यह आसन्निहितता है। समुदाय की जो जीवन पद्धति होती है वह आधुनिकता में पहुँचकर निजी जीवन का रूख ले लेता है।[2]

प्रो. योगेन्द्र सिंह ने अपनी पुस्तक **'माडर्नाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन'** में आधुनिकीकरण को एक सांस्कृतिक प्रत्यय के रूप में स्वीकार करते हैं। इसके अन्तर्गत उन्होंने तार्किक अभिवृत्ति, सार्वभौम दृष्टिकोण परानुभूति, वैज्ञानिक विश्वदृष्टि, मानवता, प्रौद्योगिकी प्रगति आदि को सम्मिलित किया है।[3]

प्रो. योगेन्द्र सिंह ने लिखा है कि भारत में आधुनिकीकरण परम्परागत सामाजिक संरचना में परिवर्तन के द्वारा हो रहा है न कि संरचना में विखण्डन के द्वारा, भारत में मुख्य रूप से आधुनिकीकरण ब्रिटिश शासन की स्थापना के उपरान्त पश्चिमी सम्पर्क के साथ आरम्भ हुआ जो सार्वभौमिक विधि–व्यवस्था, पश्चिमी पद्धति की शिक्षा, औद्योगिकरण, नगरीकरण, यातायात व संचार के नवीन साधनों के विस्तार तथा सामाजिक सुधारों के माध्यम से हुआ।

प्रो. श्यामाचरण दुबे ने अपनी पुस्तक **'कन्टेम्परेरी इंडिया एण्ड इट्स मॉडर्नाइजेशन'** में आधुनिकीकरण को मूल्यों से मुक्त मानते है। वे इसके लिए कोई निश्चित प्रारूप नहीं मानते है। उनके अनुसार आधुनिकीकरण के फलस्वरूप व्यक्तियों में तर्क, परानुभूति, गतिशीलता एवं सहभागिता बढ़ती है। आगे उन्होंने लिखा है कि आधुनिकीकरण अन्तर्गत मुख्यतः तीन बातों का उल्लेख किया हैं, वे है– समस्याओं के हल निमित्त जड़–शक्ति प्रयोग, जटिल संगठनों का निर्माण एवं जटिल संगठनों का कार्य करने के निमित्त व्यक्ति, समाज तथा संस्कृति में परिवर्तन है।[4]

प्रो. एम.एन. श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक **'सोशियल चेंज इन मॉडर्न इण्डिया'** में आधुनिकीकरण को एक तटस्थ शब्द नहीं मानते हैं। उन्होंने आधुनिकीकरण के अन्तर्गत भौतिक संस्कृति, सामाजिक संस्थाओं तथा ज्ञान, मूल्य एवं मनोवृत्तियों के क्षेत्र में सम्मिलित किया है। श्रीनिवास आधुनिकीकरण शब्द के स्थान पर पश्चिमीकरण शब्द को वरीयता देते हैं वे अपनी पश्चिमीकरण की अवधारणा को 150 वर्षों के ब्रिटिश शासन के फलस्वरूप भारतीय समाज एवं संस्कृति में आये परिवर्तन के रूप में परिभाषित करते हैं। इसके तहत वे संस्थाओं, सामाजिक मूल्यों, तकनीक तथा विचारधाराओं में होने वाले परिवर्तनों को शामिल करते हैं इनके अनुसार आधुनिकीकरण लक्ष्यों में तार्किकता की अपेक्षा करता है जिसे हर स्थिति में आवश्यक नहीं माना जा सकता।[5]

डेनियल लर्नर ने अपनी पुस्तक **'द पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी'** में लिखा है कि आधुनिकीकरण तार्किक और सकारात्मक अभिप्राय वाली विश्वव्यापी प्रक्रिया है यह शिक्षा व साक्षरता में वृद्धि, बढ़ता नगरीकरण तथा जन–संचार माध्यमों के विस्तार से तीव्र गति से बढ़ी है। आधुनिकीकरण के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रक्रियाएं एवं प्रवृत्तियाँ सम्मिलित हैं– 1. नगरीकरण में वृद्धि, 2. आधुनिक शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार 3. संचार के साधनों में वृद्धि एवं अर्थ पूर्ण विचारों का अधिकतम आदान–प्रदान होना एवं 4. आर्थिक विकास एवं प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि। डेनियल लर्नर ने स्पष्ट लिखा है कि नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा, संचार के साधनों का प्रसार तथा आर्थिक विकास आधुनिकीकरण के आधारभूत मानक है– इस काल में भारतीय समाज में संरचनात्मक आधुनिकीकरण भी हुआ जैसे– तार्किक नौकरशाही, दण्ड व्यवस्था सेना व नवीनीकरण। लर्नर ने उपर्युक्त विशेषताओं को शक्ति, तरूणाई, निपुणता एवं तार्किकता के रूप में व्यक्त किया है। उन्होंने एक मनःस्थिति, प्रगति की अपेक्षा विकास की क्षमता, परिवर्तन होने की तत्परता एवं परानुभूति को आधुनिकीकरण का प्रमुख तत्व माना है।[6]

स्पष्ट है कि आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पूर्व–आधुनिक समाज आधुनिक समाजों की विशेषताओं (यथा– आर्थिक सम्पन्नता, राजनीतिक स्थायित्व, वैज्ञानिक व तार्किक दृष्टिकोण तथा सार्वभौमिक लौकिक मूल्य आदि) को अपनाते हैं। आधुनिकीकरण 'आधुनिकता' के उन क्षेत्रों में प्रसार की प्रक्रिया है जो अभी तक उसके प्रभाव क्षेत्र से बाहर हैं। इसी प्रकार, आधुनिकीकरण मूल्यों और दृष्टिकोण के निश्चित दिशा में

रूपान्तरण की एक मानसिक प्रक्रिया भी है। इसके द्वारा पूर्व–आधुनिक समाज समूहवाद, नियतिवाद, रूढ़िवाद व धार्मान्धता से मुक्ति प्राप्त करता है।

वर्तमान में आधुनिकीकरण व इससे सम्बद्ध अन्य प्रक्रियाओं जैसे नगरीकरण, औद्योगिकरण, वैश्वीकरण इत्यादि के प्रभाव से भारतीय समाज के सभी क्षेत्रों आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। आर्थिक क्षेत्र में जहाँ वंशानुगत व्यवसाय, सरल प्रौद्योगिकी, सरल श्रम–विभाजन का स्थान व्यवसायिक गतिशीलता, जटिल प्रौद्योगिकी, विशेषीकरण व बड़े उद्योगों ने ले लिया है वही राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लिखित कानून, न्यायपालिका व मजबूत नौकरशाही तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रचलन व प्रभाव बढ़ा है। वही सामाजिक क्षेत्र में परिवारवाद से व्यक्तिवाद संयुक्त परिवार से नाभिकीय परिवार, विस्तृत नातेदारी सम्बन्धों से सीमित नोतदारी सम्बन्ध, प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति प्राथमिक सम्बन्धों के स्थान पर द्वितीयक संबंधों की प्रधानता व लैंगिक असमानता के स्थान पर लैंगिक तटस्थता का विकास हुआा है।

परिवर्तन की यह प्रक्रिया स्थूल रूप से देखने पर तो हमें चमकदार ही दिखाई देती है लेकिन सूक्ष्मता से देखने पर आधुनिकीकरण तथा इससे जुड़ी अन्य प्रक्रियाओं जैसे– शहरीकरण, औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, बाजारीकरण इत्यादि के स्याह (नकारात्मक) पक्ष भी कम नहीं है उत्तरोत्तर बढ़ती आर्थिक असमानता, शोषण, जजमानी संबंधों के स्थान पर बाजार आधारित संबंधों का विकास सामूहिकता के स्थान पर व्यक्तिवादिता, संयुक्त परिवारों का विघटन युवा पीढ़ी का विदेशों में प्रव्रजन, पति–पत्नी दोनों का कामकाजी होना, कार्यस्थल से दूरी, युवा पीढ़ी की सोच में परिवर्तन जनसंख्या का गाँव से शहरों की ओर पलायन, नैतिक मूल्यों का ह्रास, युवा पीढ़ी का संयुक्त परिवार में न रहकर एकल परिवार में रहना युवा पीढ़ी का कृत्रिमतापूर्ण व्यवहार, टी.वी., मोबाइल फोन, सोशियल मीडिया के हुए प्रभाव, बच्चों की व्यस्त दिनचर्या व गलाकाट प्रतिस्पर्धा ने परिवार के बुजुर्गों को एकांकी, असहाय, तनावग्रस्त व उपेक्षित बना दिया है।

वृद्धावस्था की अवधारणा

जीवन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो धीरे–धीरे आगे की ओर अग्रसर होती रहती है। समस्त प्राणियों में मनुष्य कतिपय विशेषताओं के कारण सर्वोच्च स्थान पर माना जाता है। शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की विशेषताओं के कारण मानव अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक उन्नत प्राणी है तथा बौद्धिक विकास की अपरिमित क्षमता एवं संभावनाओं के कारण भी इसकी श्रेष्ठता स्वंयसिद्ध हैं।

वृद्धावस्था एक प्राकृतिक व सार्वभौमिक प्रक्रिया है। आयु वृद्धि की अवधारणा के तीन परस्पर सम्बन्धित तत्व, जैविक अथवा शारीरिक आयुवृद्धि, सामाजिक सांस्कृतिक आयुवृद्धि एवं मनोवैज्ञानिक आयुवृद्धि होते हैं। यद्यपि ये तीनों परस्पर से भिन्न है किन्तु अर्न्तसम्बंधित भी है। वस्तुतः वृद्धावस्था में वे परिवर्तन निहित हैं जो जीवन के अग्रिम वर्षों में घटित होते हैं। जब शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का क्षरण स्वयं व्यक्ति तथा समाज को स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने लगता है। अर्थात आयुवृद्धि (वृद्धावस्था) वे शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन है जो जीवनकाल के मुख्य भाग के व्यतीत हो जाने पर घटित होते हैं। वृद्धावस्था का आगमन वस्तुतः जीवन के सर्वाधिक गतिशील एवं क्षमतापूर्ण काल के पश्चात् क्रमशः आयुवृद्धि के साथ–साथ होते शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों का परिणाम है। शारीरिक क्षरण व्यक्ति के शरीर के संरचना एवं उसमें होने वाली प्रक्रियाओं में आयुवृद्धि के साथ घटित होने वाले परिवर्तनों का परिणाम होता है। जैसे उत्तकों की आद्रता का क्षरण, उत्तकों के आक्सीकरण की क्रिया में कमी, कोष्ठक विभाजन, कोष्ठक वृद्धि क्षमता व ऊतक पुनर्निमाण में क्रमशः कमी, ऊतकों का नष्ट होना, ऊतकों का लचीलापन घटना, नाड़ी तन्त्र एवं मांसपेशियों की क्रियाशीलता में कमी, इन्द्रियों का शिथिलीकरण एवं शारीरिक तत्वों के पुननिर्माण की आन्तरिक क्षमता में कमी। यह आवश्यक नहीं कि ये परिवर्तन एक साथ घटित हो अथवा उनकी गति समान हो। ये परिवर्तन भिन्नता लिये हुये होते हैं। वस्तुतः शारीरिक वृद्धावस्था में इससे सम्बन्धित मानसिक क्षमता का क्षरण साथ–साथ हो तथा सामान्यतः मानसिक वृद्धावस्था से पूर्व शारीरिक वृद्धावस्था प्रारम्भ होती है।

वृद्धावस्था में सामान्यतः व्यक्ति की मानसिक क्षमता भी विपरीत रूप से प्रभावित होकर क्षीण व न्यून होती जाती है। मानसिक क्षमताओं का क्षरण मनोवैज्ञानिक वृद्धावस्था को जन्म देता है। मनोवैज्ञानिक वयवृद्धि को मात्र क्षमताओं के आधार पर नहीं मापा जा सकता है, अपितु उनके उस उपयोग के मापदण्ड पर आंका जा सकता है जो प्रारम्भिक आयु से ही प्रौढ़ावस्था के वर्षों तक किया गया है। मनोवैज्ञानिक वृद्धावस्था की प्रक्रिया व्यक्ति के वैचारिक स्तर के अनुसार गतिमान होती है। अतः जब व्यक्ति यह अनुभव करने लगता है कि वह वृद्ध हो रहा है तो मनोवैज्ञानिक वयवृद्धि की गति में भी वृद्धि होने लगती है।

आजकल सभी सरकारी दफ्तरों, बैंकों, रेल्वे स्टेशनों, बस–स्टेण्ड, पेंशन ऑफिस व सामान्य बोलचाल की भाषा में बुजुर्गों के लिये वरिष्ठ नागरिक (Senior Citizens) शब्द का उपयोग अधिक किया जा रहा है। अब प्रश्न यह उठता है कि वरिष्ठ नागरिक की परिभाषा क्या है? क्या कोई निश्चित आयु सीमा पार करने पर व्यक्ति वरिष्ठ नागरिक कहलायेगा या फिर जब वह स्वयं अपने को वरिष्ठ माने तब उसे वरिष्ठ माना जाये। कहने का तात्पर्य यह है कि आखिर वो कौन सी आयु हो जिसके पश्चात् व्यक्ति को वरिष्ठ, वृद्ध या बुजुर्ग माना जाये। सरकार ने 60 वर्ष की आयु से ऊपर वाले व्यक्ति को वरिष्ठ की संज्ञा दी है इसलिये उन्हें वरिष्ठ मानते हुये अधिकतर सरकारी विभागों में सेवानिवृत्ति की आयु भी 60 वर्ष तय की गई है। वृद्धावस्था के आगमन के साथ व्यक्ति के जीवन में कई परिवर्तन आने शुरू हो जाते हैं, जैसे– बालों का सफेद होना, नजर कमजोर होना, शारीरिक शिथिलता, थकान जल्दी होना आदि। वृद्धावस्था को भिन्न–भिन्न विद्वानों ने अलग–अलग तरीके से परिभाषित किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सामान्य रूप से वृद्ध एवं वृद्धावस्था को जनसंख्या के निश्चित भाग व उसकी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु समाजशास्त्रियों द्वारा इसे जनसंख्या के एक भाग व वृद्धावस्था की प्रक्रिया के साथ विभिन्न कारकों के साथ जोड़कर देखा जाता है। जिसमें ये कारक शारीरिक (जैविक) तथा सामाजिक सांस्कृतिक दोनों दिशाओं में सम्मिलित रूप से प्रस्तुत किये जाते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वृद्धजनों को पहले एक नाविक के रूप में माना जाता था, जो कि सभी की एक सही दिशा की ओर ले जाता था क्योंकि उनके साथ उनका व्यवहारिक अनुभव जुड़ा हुआ था लेकिन बढ़ते हुए आधुनिकीकरण ने संसार को तो छोटा कर दिया है लेकिन बुजुर्गों को अकेला कर दिया है। युवा पीढ़ी की व्यस्तता, व्यक्तिवादिता, आवश्यकताओं की बढ़ोतरी प्रव्रजन (कार्य हेतु), एकांकी परिवार की सोच ने वृद्धजनों की समस्याओं को बढ़ाया है।

हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने भी वरिष्ठ नागरिकों व समाज के अन्य कमजोर वर्गों की सामाजिक सुरक्षा व कल्याण के लिए संविधान के मूल अधिकारों के साथ–साथ नीति–निर्देशक तत्वों के अनुच्छेद–38, 39, 41, 42 में प्रावधान किये गये हैं इन्हीं के अनुपालन में हमारे देश में राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम 1995 में गरीब परिवार के वृद्ध व्यक्ति के लिए सामाजिक सहायता की एक राष्ट्रीय नीति प्रस्तुत की गई साथ ही 1999 में सर्वप्रथम वृद्धजनों के लिए राष्ट्रीय नीति की घोषणाव की गई तथा **नवीन राष्ट्रीय वृद्धजन नीति 2011 में लागू की गई इसका मुख्य उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल व कल्याण को प्रोत्साहित करना है** इसके अलावा केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2005 में वृद्ध व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय वृद्धजन परिषद का पुनर्गठन किया गया जो वृद्धों के बारे में कार्यक्रमों और नीतियों के लिए सरकार को सलाह व अनुशंषा करता है इसके अलावा राज्य सरकार द्वारा भी वृद्ध व्यक्तियों के कल्याण व सामाजिक सुरक्षा के लिए विभिन्न पेंशन योजनाऐं, वृद्धाश्रम (चिरायु योजना) तथा कैम्प लगाकर वृद्धों को सहायक उपकरण जैसे– छड़, चश्मा, सुनने की मशीन इत्यादि का वितरण (वयोश्री योजना) के तहत किया जा रहा है यही नहीं **भारत सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए 'माता–पिता व वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण तथा कल्याण अधिनियम 2008– 29 दिसम्बर, 2007 को पारित किया गया इसमें संतानों के लिए बाध्यकारी प्रावधान किये गये हैं, ताकि वे अपने माता–पिता की वृद्धावस्था में उचित देखभाल करें जिससे कि वृद्धजन सामान्य व सम्मानजनक जीवन जी सकें।**

भारत में वृद्धजनों के सम्बन्ध में आयुवृद्धि के विषय पर बहुत कम अध्ययन हुआ है। इस क्षेत्र में साठवें दशक में अध्ययन प्रारम्भ हुआ तथा सेवानिवृत्त वृद्धजनों के विषय में कुछ अध्ययन किये गये हैं। वृद्धजन समाज में सकारात्मक व विशेष स्थान रखते हैं। लगभग सभी संस्कृतियों में वृद्धजन परिवार व समाज में एक जुटता बनाये रखने में धार्मिक, आर्थिक व सामाजिक सम्बन्धों में सलाह व निर्देश महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। समाजीकरण में उनका बड़ा योगदान होता है। सामाजिक परम्परा, रीतिरिवाज, मूल्य व अन्य उन्हीं के द्वारा समझाई जाती है।

- **उल्रिच बैक (1986)** ने अपनी पुस्तक **'Risk Society'** में आधुनिकता के नकारात्मक प्रभाव को उभारा है तथा कहा है कि आधुनिकता में व्यक्तिवादिता बहुत अधिक है इस व्यक्तिवादिता में मनुष्य पर कोई लगाम नहीं, किसी का दबाव नहीं है।
- **उल्रिच बैक (1986)** ने अपनी पुस्तक **'Risk Society'** में आधुनिकता के नकारात्मक प्रभाव को उभारा है तथा कहा है कि आधुनिकता में व्यक्तिवादिता बहुत अधिक है इस व्यक्तिवादिता में मनुष्य पर कोई लगाम नहीं, किसी का दबाव नहीं है।
- **एन्थोनी गिडेन्स (1991)** ने अपनी पुस्तक **Modernity and Self Identify** में बताया कि आधुनिकीकरण की शुरूआत सर्वप्रथम उत्तरी यूरोप में हुई थी जो बाद में 20वीं शताब्दी में उत्तरोत्तर वैश्विक बनती चली गई। इन्होंने आधुनिकीकरण की व्याख्या 4 आधारों पर की है– 1. पूंजीवाद 2. उद्योगवाद 3. निगरानी 4. सैनिक क्षमता तथा गिडेन्स ने बताया कि आधुनिकता ने कई भौति समस्याओं के अतिरिक्त मानसिक व सामाजिक संबंधों की समस्याऐं पैदा की है इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण अस्तित्व की समस्या है जिसने विश्वास के आधार को हिला कर रख दिया। आधुनिक समाज की इन कमजोरियों के कारण गिडेन्स ने आधुनिक समाज को **A Runway Society** कहा है इसके बावजूद भी गिडेन्स का विश्वास है कि अभी अधिक विलम्ब नहीं हुआ है और हम अभी भी अपनी भूल सुधार सकते हैं।
- **जे.पी. प्रो. पचौरी (1992)** ने केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली की पत्रिका में पकाशित अपने लेख **"वृद्धावस्था एक सामाजिक विवेचन"** में लिखा है कि हमारे देश में अब वृद्धावस्था एक प्रमुख सामाजिक समस्या बन रही है वृद्धावस्था में मनुष्य उपेक्षित व अनुपयोगी महसूस करता है तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों में वृद्धजनों को अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
- **प्रो. योगेन्द्र सिंह (1994)** ने अपनी पुस्तक **Modernisation of Indian Tradition** में बताया है कि आधुनिकता का सामना परम्पराओं से होता है एवं साथ ही उन्होंने कहा है कि आधुनिकता के कारण परम्पराओं में परिवर्तन हो जाता है या तो उनका आधुनिकीकरण हो जाता है या वे पूरी तरह आधुनिकता के प्रभाव में आकर विलुप्त हो जाती है।
- **दीपाकर गुप्ता (2000)** ने अपनी पुस्तक **'Mistaken Modernity'** द्वारा आधुनिकता के सही एवं गलत दृष्टिकोण एवं समीक्षा को विस्तृत रूप के जो मायने वर्तमान में पश्चिमी देशों के अनुकरण से प्रचलित है, को सही रूप में स्पष्ट किया है उनका कहना है कि आधुनिकता के बारे में लोगों में कई गलत फहमियाँ प्रचलित है। दीपांकर गुप्ता का कहना है कि सिर्फ तकनीकी तंत्र की उपस्थिति ही आधुनिक नहीं है बल्कि मानव–मूल्य भी इसका एक बड़ा भाग है। उनका मानना है कि केवल पश्चिमी देशों के व्यवहार व संस्कृति को अपनाना ही आधुनिकता नहीं हैं।
- **प्रो. के.एल. शर्मा (2009)** ने अपनी पुस्तक **डायमेन्शंस ऑफ ऐजिन्ग** में वृद्धजनों से जुड़ी सामाजिक–ओद्योगिक आर्थिक समस्याओं पर विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला है।
- **सुभाषचन्द्र गुप्ता और शर्मा कंचनलता (2009)** ने **'वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा, शोषण एवं समस्याऐं'** पुस्तक में लिखा है कि परिवार में वृद्ध महिलाऐं सम्मान का अनुभव नहीं करती है उनकी उपेक्षा व शोषण इस तथ्य से साबित होता है कि परिवार में उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जाती व

उनकी बातों को भी महत्व नहीं दिया जाता, इसके कारणों में इन्होंने पाया कि संयुक्त परिवारों का विघटन, भौतिकवादी विचारधारा, नई व पुरानी पीढ़ी के बीच पीढ़ीगत अन्तराल, औद्योगिकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, व्यक्तिगत स्वार्थ इत्यादि के कारण वृद्ध महिलाओं की समस्याओं में वृद्धि हुई है।

- **जसविंदर कौर भांगू (2013)** द्वारा संपादित पुस्तक **'बढ़ती उम्र और समकालीन भारतीय समाज : मुद्दे एवं सरोकार'** पुस्तक में वृद्धावस्था के मुद्दों व समस्याओं की विभिन्न दृष्टिकोणों से पड़ताल व व्याख्या करने की कोशिश की गई है। वरिष्ठ नागरिकों के प्रति संवेदनहीनता, अकेलापन, उत्पीड़न, वृद्धाश्रमों में होने वाली समस्याएँ, पोषण की समस्या, वृद्धावस्था के प्रति भय व शंकाऐं, समाज में हाशिये पर धकेले जाने का दुःख व पीड़ा, अन्तः पीढ़ी सम्बन्ध, सोश्याल मीडिया का प्रभाव तथा वृद्धों की सामाजिक–आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है।
- **रेणु त्यागी और तत्वमणी पलटा सिंह** द्वारा 2015 में संपादित पुस्तक ***Caring for the Elderly : Social Gerentology in India Context'** में भारत में वृद्धावस्था और बुजुर्गों के जीवन से जुड़ी सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा स्वास्थ्य समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में लेखक ने भारत में तेजी से बढ़ रही वृद्धजनों की जनसंख्या के पीछे, सामाजिक व जनसांख्यिकी कारकों की व्याख्या कर वृद्धजनों की कमजोरियों और चुनौतियों की पहचान करके नीतिगत सुधारों, सामाजिक हस्तक्षेपों और देखभाल प्रणाली को मजबूत बनाने पर बल दिया गया है। यह पुस्तक भारत में वृद्धजनों की सामाजिक वास्तविकताओं को अकादमिक कठोरता और मानवीय दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करती है और साथ ही स्पष्ट करती है कि भारत में वृद्धजन आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और देखभाल संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। विशेष रूप से यह पुस्तक भारत को **age friendly Policies,** मजबूत **Geniatic care,** बेहतर **Social Security** और **Intergenerational Solidasity** की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है।
- **प्रसुन चटर्जी** द्वारा 2019 में लिखित पुस्तक **'Health and Werbeing in late life'** वृद्धावस्था की चुनौतियों, स्वास्थ्य व कल्याण दोनों को ध्यान में रखते हुए लिखी गई एक महत्वपूर्ण पुस्तक हैं। यह पुस्तक भारत की सामाजिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि में बुढ़ापे को समझने–सहने का एक बहुआयामी दृष्टिकोण देती है। इसमें वृद्धजनों की दिन–प्रतिदिन की समस्याओं जैसे डिप्रेशन, डिमेंसिया, कमजोरी, अकेलापन इत्यादि को उजागर किया गया है साथ ही यह पुस्तक बताती है कि कम संसाधनों वाले परिवेश में किन उपायों को अपनाकर वृद्धावस्था में जीवन को गरिमापूर्ण सक्रिय और सुखद बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त लेखक वृद्धजनों के परिजनों और देखभालकर्ताओं को सुझाव देता है कि किस प्रकार सहानुभूति, समझ, सामाजिक समावेश और पारिवारिक समर्थन के जरिये बुढापे की समस्याओं को हल किया जा सकता है ताकि उम्र बढ़ने के साथ भी व्यक्ति का जीवन सम्मान और गरिमा के साथ गुजर सके।
- **माला, कपूर शंकरपाल** द्वारा 2021 में लिखित पुस्तक **'Ageing issues in India'** में लिखा है कि भारत में 60+ आबादी का अनुपात लगातार बढ़ रहा है जबकि स्वास्थ्य पसेवायें, जेरियाट्रिक देखभाल पुनर्वास सुविधायें और पेंशन–सुविधायें पर्याप्त नहीं है। बदलते पारिवारिक ढाँचे जैसे संयुक्त परिवारों का टुटना और नाभिकीय परिवारों का बढ़ने के कारण बुजुर्ग अकेलेपन उपेक्षा और सामाजिक अलगाव का सामना कर रहे हैं। आर्थिक असुरक्षा विशेषकर महिलाओं और वंचित समूहों में, समस्या को और गम्भीर बनाती है। यह पुस्तक स्वास्थ्य देखभाल के मजबूत ढाँचे सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार पेंशन सुधार और सक्रिय एवं स्वस्थ वृद्धावस्था को बढ़ावा देने की जरूरत पर जोर देती है। इसमें यह भी बताया गया है कि समाज में जागरूकता, सम्मान और समावेश बढ़ाकर बुजुर्गों के जीवन की गुणवत्ता को बेहत्तर किया जा सकता है।

- **निधि चावला**[25] और **रेशमी चक्रवर्ती** ने 2023 में प्रकाशित पुस्तक **'Rethinking Ageing'** में भारत में वृद्धावस्था को देखने के पारम्परिक नजरिये को चुनौती देती हैं यह पुस्तक बुढ़ापे को देखने का एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हुई लिखती हैं कि उम्र बढ़ना केवल गिरावट निर्भरता या निष्क्रियता का प्रतीक नहीं है। पुस्तक में अनेक ऐसे वास्तविक जीवन के उदाहरण दिये गये हैं जिनमें लोग 60–80 वर्ष की आयु में नई शुरूआत करते हैं। जैसे लेखिकाएँ बताती है कि आधुनिक भारत में शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीक व सामाजिक अवसरों में बुजुर्गों के लिए नये रास्ते खोजे हैं। 'एक्टिव एजिंग' के विचार के अनुसार वृद्धावस्था में भी उद्देश्यपूर्ण जीवन, सीखना, कौशल विज्ञान और सामाजिक भागीदारी संभव है। पुस्तक का मुख्य संदेश है कि उम्र की सीमाओं के बकजाय संभावनाओं के रूप में देखा जाए और बुजुर्गों को सम्मान, स्वतंत्रता और नए अवसर प्रदान किए जाएँ।
- **के. शंकरदास**[26] द्वारा 2025 में संपादित पुस्तक **'The Routledge Handbook of Contemporary Ageing Issues: Global and Country Narratives'** वृद्धावस्था और आधुनिक समाज के अंतर्संबंधों पर आधारित एक महत्वपूर्ण नवीनतम कृति है। यह पुस्तक वैश्विक स्तर पर बढ़ती वृद्ध जनसंख्या, आधुनिकीकरण, पारिवारिक संरचनाओं में बदलाव और बुजुर्गों की सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। पुस्तक में विभिन्न देशों के उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रिया नें ने वृद्धजनों की पारंपरिक भूमिका, पारिवारिक सम्मान और निर्णय–क्षमता को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस पुस्तक में बहुविषयक दृष्टिकोण से समाजशास्त्र, जनसंख्या अध्ययन, सामाजिक नीति और स्वास्थ्य अध्ययन को एक साथ जोड़ा गया है। लेखक यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि आधुनिकीकरण के कारण जहाँ एक ओर चिकित्सा और जीवन–प्रत्याशा में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक अलगाव, अकेलापन और देखभाल की समस्याएँ भी बढ़ी हैं। इस पुस्तक में वृद्ध–अनुकूल समाज के निर्माण के लिए सुझाव भी दिये गये हैं।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि विश्व में जनसंख्या तथा औसत आयु में वृद्धि होने के कारण विश्व में वृद्धजनों की जनसंख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। विकसित देशों में यह प्रक्रिया विलम्ब से प्रारम्भ हुई है। वृद्धजनों की जनसंख्या वृद्धि की गति कुल जनसंख्या की वृद्धि दर की गति से अधिक तीव्र होने के कारण भारत में गत कुछ दशकों में 60 वर्षीय लोगों की जनसंख्या में अत्यधिक तीव्र वृद्धि हुई है। जिससे इस विशाल वर्ग के समायोजन से सम्बन्धित अनेकों समस्याऐं उपस्थित हो गई है। वृद्धावस्था एक विश्वव्यापी परिदृश्य है। विश्व में वृद्धों की संख्या में तथा जनसंख्या के अनुपात में, दोनों में ही वृद्धि हो रही है। इस दृष्टि से भारत में भी वृद्धजनों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। गत कुछ दशकों में पर्यावरणीय व भौगोलिक ढांचे में परिवर्तन के परिणामस्वरूप वृद्धजनों की पूर्ण जनसंख्या के अनुपात में वृद्धि स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही है। इसी प्रकार औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण की गति में पर्याप्त वृद्धि के कारण हो रहे सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों ने समाज में वृद्धजनों की स्थिति में उनकी भूमिका, स्तर एवं महत्व के संदर्भ में भी अनेक नये आयाम प्रस्तुत किये है। वृद्धावस्था की चुनौतियां वर्तमान संदर्भ में, जहां समाज में युवावर्ग के बढ़ते प्रभाव, उपयोगितावाद, उत्पादन क्षमता, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, व्यक्तिवाद तथा उपलब्धियाँ प्रमुखता लिये हुये है, और भी गहन हो गई है।

भारतीय सामाजिक संरचना व मूल्य तन्त्र में परिवर्तन हो रहा है। यह पाया गया है कि सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन जैसे संयुक्त परिवार, जाति व ग्रामीण समुदाय, वृद्ध लोगों की शारीरिक क्षमता में कमी आदि अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धावस्था को प्रभावित कर रहे हैं। हमारे समाज में इस परिवर्तन का कारण तीव्र गति से हो रहे औद्योगिकीकरण व शहरीकरण को पाया गया है जो हमारे समाज में अनेक परिवर्तन ला रहा है। शहरी क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के उत्पाद के रूप में व्यक्तिवाद व आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता का जन्म हुआ है। इस कारण से वृद्धजनों की परिवार द्वारा उपयुक्त देखभाल सम्भव दिखाई नहीं देती है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवारों का विघटन एकांकी परिवारों मं हो रहा है और यह परिवर्तन परिवार के परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन ला रहा है।' औद्योगिकीकरण व आधुनिकीकरण के प्रभाव से भारतीय समाज की चिरप्रचलित संयुक्त परिवार

प्रणाली के विपरीत रूप से प्रभावित होने से परिवार में वृद्धजनों का भौतिक व बौद्धिक एकांकीपन अनेक समस्याओं को जन्म देता है। वृद्धजनों की समस्यायें मूलतः सामाजिक व चिकित्सा सम्बन्धी है। इसके अतिरिक्त आर्थिक असुरक्षा भी एक विकट समस्या के रूप में उपस्थिति है।

इस प्रकार उपर्युक्त साहित्यावलोकन से स्पष्ट है कि युवावर्ग का व्यवहार बुजुर्गों के प्रति बदल गया है। उन्हें जताया जाता है कि वे अब वृद्ध हो चले है फलस्वरूप बुजुर्ग अपने को पराधीन, असहाय, मानकर सब अपनी जिन्दगी के दिन मृत्यु के इन्तजार में काटते नजर आते हैं। उन्हें मानसिक टूटन देने और सिर्फ दिन काटने की भावना को मन में स्थान देने के लायक बनाने में उनकी सन्तानों का ही हाथ होता है। ऐसा नहीं है कि इस कमजोरी को दूर नहीं किया जा सकता है और उन्हें दुबारा जीने के लिये प्रेरित नहीं किया जा सकता। इस सबके लिये सहयोग और प्रेम की आवश्यकता होती है परन्तु वर्तमान पीढ़ी इन गुणों को कहीं बहुत पीछे छोड़ आयी है। सभी विकासशील देशों में जिसमें भारत भी सम्मिलित है, यहां के वृद्धजनों के कल्याण की आवश्यकताव प्रमुख रूप से ध्यान आकार्षित करने वाली है। आधुनिकीकरण, शहरीकरण, टूटते संयुक्त परिवार, वैश्वीकरण, उपभोक्तावादी व आर्थिक वृद्धि की सोच देश की सदियों पुरानी परम्परागत संस्कृति को प्रभावित कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Learner, D. (1958). The Passing of traditional Society. Free Press.
2. Parson, T. (1971). The System of Modern Societies. Prentic Hall.
3. Sahu Chaturbhuj (1998). Problems of Ageing among the Indian Tribes. Sarup and Sons, New Delhi.
4. Semrit, R.C. (1955). Old age in Havai : A Study of Older Population.
5. Ramamurty, P.V. (1968). A Study of Some factors Related to Adjustment of Urban aged man.
6. Disuja, Alfred (1982). The Social Organization of Ageing among the Urban Pror.
7. पचौरी, जे.पी. (1992). वृद्धावस्था : एक सामाजिक विवेचन
8. Gupta, Dipankar (2000). Mistaken Modernity.
9. Gupta, Subhash Chandra and Sharma, Kanchanlata (2009) वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा, शोषण एवं समस्याएँ
10. भंगू, जसविंदर कौर (2013), बढ़ती उम्र और समकालीन भारतीय समाज।
11. Paltasingh, T. and Tyagi, R. (2015). Caring for the Elderly: Social Gerontology in Indian Context. Sag Publication India.
12. Chatterjee, P. (2019). Health and Wellbeing in Late Life: Perspectives and Narratives from India. Springer.
13. Shankar Pal, M.K. (2021). Ageing issues in India: Practices, Perspectives and Policies. Springer Singapur.
14. Chawla, N. and Chakraborty, R. (2023). Rethinking Ageing. Penguin Random House, India.
15. Shankardass, K. (Ed.). (2025). The Routledge Handbook of Contemporary Ageing Issues: Global and Country Narratives. London: Routledge.

❑❑❑